B.A. Part-II Subject - Psychology (Subsidiary)
Teacher — A. K. Sinha Date 05.04.2021

असामान्य मनोविज्ञान का संक्षिप्त इतिहास

मानव सृष्टी के प्रारम्भ से ही एक दूसरे से रंग, रूप, शारीरिक गठन, मानसिक विचारों, व्यवहारों में भिन्नता पाये जाते हैं। ये भिन्नताओं के मूल कारण, वंशपरम्परा, स्वभाव, जलवायु, सामाजिक आर्थिक अवस्था, परिस्थितियाँ, वातावरण आदि हो सकते हैं। चूँकि असामान्य मनोविज्ञान सामान्य मनोविज्ञान का ही एक शाखा है जिसमें प्राणी के असामान्य अनुभूतियों एवं व्यवहारों की व्याख्या की जाती है। इसलिए असामान्य व्यवहारों की व्याख्या के लिए इसके प्रारम्भिक इतिहास का ज्ञान होना आवश्यक प्रतीत होता है। असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास को निम्नांकित युगों में बाँट कर विवेचना किया जा सकता है। :—

(1) पाषाण युग :— इस युग में चूँकि मानव सभ्यता अधिक विकसित नहीं था इसलिए लोग पत्थर के बर्तन तथा औजारों का ही प्रयोग करते थे। इसलिए इस युग को पत्थर या पाषाण युग के नाम से जाना जाता है। इस युग में जीववाद (Animism) के विचारधारा से लोग अधिक प्रभावित थे। खास कर Greek, चीन तथा मिस्र आदि देशों के लोगों में यह अवधारणा काफी प्रचलित था। इस अवधारणा में लोग यह समझते थे कि पेड़-पौधों को बढ़ने, फलने में, नदियों झरनों के पानी बहने में, पत्थर लुढ़कने में हवा चलने में किसी न किसी जीव का ही हाथ होता है। और यह जीव कोई अलौकिक देवता होता है। इसी प्रकार असामान्य व्यवहार के मूल कारण किसी दुष्ट आत्मा या अपदूत प्राणी में वास कर गया है और मानसिक रोग से ग्रसित रोगी में पिशाच आधिपत्य (Demon Possession) माना जाता था। इस प्राचीन जीववादी अवधारणा के आधार से न केवल असामान्य मानसिक अवस्था की व्याख्या प्रभावित हुई बल्कि उसका उपचार विधि भी प्रभावित हुआ।

इन अवधारणा के दुष्ट आत्मा या अपदूत जो प्राणी के शरीर में प्रवेश कर जाता है उसे निकालने के लिए दो प्रविधियाँ प्रचलित थी :-

(A) पहले तो अपदूत-निवारण (Exorcism) विधि द्वारा असामान्य व्यवहार वाले प्राणी के शरीर से बुरी आत्मा या अपदूत को बाहर निकालने के लिए प्रार्थना, जादू टोना, शोर गुल, झाड़-फूंक तथा कोड़े लगाना, भूखा रखना आदि कष्टदायक विधियाँ प्रचलित थी। क्योंकि लोग ऐसा मानते थे कि ऐसा करने से बुरी आत्मा (evils) शरीर से बाहर निकल जायेगी और प्राणी असामान्य व्यवहार करना छोड़ कर सामान्य व्यवहार अपना लेगा। उस समय Greek, चीन तथा मिश्र में धार्मिक पुजारी या ओझा ही मानसिक रोग के चिकित्सक हुआ करते थे

(B) दूसरा है Trephination प्रविधि - इस प्रविधि में असामान्य व्यवहार वाले प्राणी या मानसिक रोगी के शरीर के भीतर वास किये हुए दुष्ट आत्मा या अपदूत को बाहर निकालने के लिए ट्रेफाईन Trephine विधि का प्रयोग किया जाता था जिसके अन्तर्गत किसी नुकीले पत्थर द्वारा रोगी के मस्तिष्क में छिद्र किया जाता था ताकि दुष्ट आत्मा बाहर निकल जाय और रोगी स्वस्थ होकर सामान्य व्यवहार करने लग जाय।

परन्तु सभ्यता के विकास का क्रम जैसे-जैसे बढ़ता गया वैसे-वैसे असामान्य व्यवहारों या मानसिक रोगों से सम्बन्धित उपर्युक्त अवधारणाओं एवं चिकित्सा प्रविधियों को अंधविश्वास, अमानवीय मान कर नकार दिया गया और नया विचारधारा उत्पन्न हुआ जिसे दार्शनिक विचार या दृष्टिकोण के नाम से प्रचलित हुआ।

2. दार्शनिक (युग) विचार (Philosophical Concept) :—

असामान्य व्यवहार या मानसिक रोगियों के प्रति युगों के विचार धाराओं को खण्डित करते हुए Greek दार्शनिकों ने नये विचारधारा का जन्म दिया गया जिससे Hippocraties को आधुनिक चिकित्साशास्त्र का जन्म हुआ। इस विचारधारा के अनुसार मानसिक रोग मस्तिष्कीय विकृति के कारण होता है। Hippocraties के अनुसार सभी मानसिक रोग तीन श्रेणियों का होता है:— उन्माद (Mania), विषाद (Melancholia) तथा उन्मत्तता (Phrenitis)। इसकी आधुनिकतम चिकित्सा पर बल देते हुए रोगियों का निरन्तर निरीक्षण एवं दैनिकचर्या में संशोधन का सुझाव दिया। Hysteria के रोगी को स्त्रियों का रोग बताया जिसमें गर्भाधान की इच्छा से गर्भाशय का विचरण बताया तथा विवाह को इसका उचित चिकित्सा का सुझाव दिया। इस विचारधारा के अनुसार मानसिक रोगियों के लिए अनुकूल तथा सुरक्षित वातावरण तैयार करने पर भी बल दिया गया।

इस युग के महान दार्शनिक प्लेटो ने मानसिक रूप से असंतुलित तथा अपराधजन्य क्रिया करने वाले व्यक्तियों का अध्ययन किया और बताया कि ऐसे लोग प्रत्यक्ष रूप से असामाजिक कार्यों के लिए जिम्मेवार नहीं हैं। इन्होंने ऐसे व्यक्तियों के प्रति मानवीय व्यवहार करने पर बल दिया और यदि उनके सगे-सम्बन्धी मानवीय व्यवहार नहीं करते हो तो उन्हें जुर्माना लगाकर दण्डित किया जाय न कि रोगी के प्रति अमानवीय व्यवहार किया जाय।

प्लेटो का शिष्य अरस्तु ने भी मानसिक रोगियों के प्रति अपना विचार प्रकट किये हैं। इनका विचार प्लेटो से भिन्न Hippocraties से मिलता जुलता है। इनके अनुसार मानसिक बीमारियाँ पित्त से उत्पन्न अशान्ति या विकृति के कारण होती है। यानि मानसिक असंतुलन शारीरिक अवयवों के उत्पन्न विकृति के कारण होता है। अतः इन्हें शारीरिक आवश्यकताओं की आपूर्ति अपेक्षित है।

शेष पृष्ठ - 4 पर

इस सन्दर्भ में इतर Greek तथा Romans के योगदानों का उल्लेख करना उपयुक्तसंगत प्रतीत होता है। इसयूपिक तथा रोमनों ने भी मानसिक रोगियों तथा असामान्य व्यवहारों के सन्दर्भ में Hippocretics का ही अनुसरण किये। कुछ रोमन चिकित्सकों जैसे Asclepiades, Cicero, Aretaeus तथा Galen आदि ने भी मानसिक रोगों के अध्ययन में योगदान दिया। Asclepiades ने सबसे पहले तीव्र तथा चिरकालिक मानसिक रोगों के बीच अन्तर स्थापित किया। जबकि Cicero ने शारीरिक रोगों के लिए सांवेगिक कारकों को उत्तरदायी ठहराया। इसके एक शताब्दी बाद Aretaeus ने पहले पहल बताया कि उन्माद तथा विषाद एक बीमारी के दो मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति अलग अलग परिस्थितियों में प्राप्त होती है। Galen, एक Greek चिकित्सक जो रोम में रहते थे, ने मानसिक रोगों के कारणों को शारीरिक और मानसिक श्रेणियों में विभक्त किया। Galen की मृत्यु 200AD के पश्चात मानसिक रोग से संबंधित वैज्ञानिक विचारधारा का भी अन्त हो गया और फिर से लोग (जाति-200 AD के बाद) तथा चिकित्सक मानसिक रोग का कारण दुष्ट आत्मा का शरीर में प्रवेश करना तथा दैविक प्रकोप मानने लगे और उपचार की पुरानी पद्धतियों को अपनाने लगे। यह 500 AD तक रहा जिसे असामान्य मनोविज्ञान के इतिहास में अन्धकार युग (Dark Age) कहा जाता है।

→ शेष पृष्ठ-5 पर